Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

सूरकाव्य के पात्रों में विचारपरकता

Pushpa Rani*

Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Rajasthan

सारांश – सूर सागर में अनेक पात्रों का प्रसंग मिलता है। लगभग ये पात्र श्रीमद्भागवत में भी मिलते है। सूर सागर में परम्परागत पात्रों और लोक पात्रों का भी समावेश हुआ है। मुख्यरूप से ये पात्र दो प्रकार की विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते है। जैसा कि भगवत गीता में कहा गया है कि दो प्रकार की सम्पदाएं विद्यमान है। परस्पर दोनों की विचारधाराओं का भी टकराव होता है। एक दैवी सम्पदा दूसरी आसुरी सम्पदा है।[1]

----------♦----------

प्रस्तावना

सूर सागर में भी ये दो प्रकार के पात्रों की विचारधाराएं मिलती है। सूरसागर में दैवी सम्पदा के प्रतिनिधि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण हैं, जो स्वयं अवतार है उनके अवतार का उद्देश्य भक्तों और सज्जनों की रक्षा करना और दुष्टों का दमन करना है। सूरदास ने उनको कई प्रकार के विचारों का पुञ्ज बताया है। वे एक बालरूप में और किशोर रूप में लीला करते है। ब्रजभूमि उनका लीला स्थल है वे कुरूक्षेत्र के महाभारत युद्ध में अर्जुन के सारथी बनते है। वे द्वारका में द्वारकाधीश बन जाते है। अतः उनकी लीलाएँ विचित्र है। इसलिए ये अनेक विचारों के समन्वय के द्योतक है। आसुरी सम्पदा के सबसे बड़े प्रतिनिधि कंस है। जो विवेकहीन हैं और असंवेदनशील है। वे दुष्ट प्रवृति के है जो अपनी बहन पर भी अत्याचार करते है और कृष्ण को मारने के लिए अनेक प्रकार के षड़यंत्र रचते है। और अंत में कृष्ण के द्वारा मारे जाते है। नंद बाबा सरलता के प्रतीक है और गोपोंकों में बड़े लोकप्रिय है और गोहितकारी है। वे वेद और लोक की मर्यादाओं को मानने वाले है, उनका सारा जीवन कृष्ण और बलराम के प्रेम से ओत–प्रेत रहा है। यशोदा वात्सल्य की प्रतिमा है। कृष्ण के प्रति उनका अत्याधिक प्रेम है। वे ममता की साकार प्रतिमा है। कृष्ण के प्रति उनका प्रेम मोह का रूप धारण कर लेता है जब गोपियां कृष्ण की माखनचोरी और नटखटपन की शिकायतें करती है तो वे उनको उलटा ड़ांट देती है कि मेरा लाल ऐसा नही हो सकता। राधा प्रेम की साकार प्रतिमा है। कृष्ण के प्रति राधा का प्रेम अनुपम है। गोपियां निष्कपट प्रेम की प्रतिमाएं है। वे कृष्ण के प्रेमाकर्षण में वेद और लोक की मर्यादाओं को भी भूल जाती है। वे परकीया प्रेम और महाभाव की साकार स्वरूप है। बड़ें–बड़ें ऋषि मुनि भी गोपियों के प्रेम के सामने अपने को हीन मानते है। बलराम और कृष्ण मातृप्रेम के आदर्श है कभी–कभी छोटे–भाई, बड़े–भाई की शिकायत यशोदा से करते है। जो स्वभाविक है। 'मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायौ'[41] कृष्ण चतुर है बलराम भोले–भाले है। किन्तु बड़े बलवान अक्खड़ और लड़ाकू भी है। गदा युद्ध में उनका कोई सामना नही कर सकता। रूकिमणी के विवाह प्रसंग में वे श्री कृष्ण की रक्षा के लिए दौड़ पडते है। कृष्ण यशोदा और रोहिणी दोनों माताओं का आदर करते है। बलराम भी उनकी दृष्टि में दोनो ही समान माताएं है। वो बालकों के साथ कृष्ण और बलराम का सच्चा स्नेह है। गोपबालाओं और कृष्ण में कभी–कभी टकराव भी हो जाता है। गेंद को लेकर श्रीदामा और कृष्ण में तकरार हो जाती है। सूरदास ने बाल सुलभ मनोविज्ञान का यथार्थ चित्रण किया है।

पूतना, कागासुर, बकासुर, शकटासुर अनेक दुष्ट व्यक्ति कंस द्वारा कृष्ण को मारने के लिए भेजे जाते है। कृष्ण सभी प्रकार के दुष्टों का दमन करते है। चाहे वे मनुष्य हो या इतर प्राणी जैसेः– कालियनाग, कालियानाग ब्रज के लिए एक संकट था। कृष्ण बड़े चातुर्य से उस विषधारी का दमन करते है। सूरदास ने राम कथा का वर्णन किया है। वे राम को मर्यादा पुरूषोतम मानते है। सीता को नारी जाति का आदर्श मानते है। लक्ष्मण भातृप्रेम के साकार स्वरूप है। रावण कंस की तरह आसुरी सम्पदा का प्रतिनिधि है। वह कपट चाल से सीता का अपहरण करता है और अंत में कुटुम्ब सहित मृत्यु को प्राप्त होता है। हनुमान भक्ति के मूर्तिमान स्वरूप है वे बुद्धि और बल के निधान है। वे दुष्टों का नाश करते है और स्वजनों और सज्जनों की रक्षा करते है। वे बड़े पराक्रमी है। विभीषण सदाचार को मानते है और अपने बड़े भाई रावण को समझाते है और अन्त में रावण द्वारा अपमानित होकर राम की शरण में आ जाते है राम शरणागतवत्सल विभीषण का विश्वास करते है। सुग्रीव मित्रता का निर्वाह करते है अतः सूरदास जी ने भी तुलसीदास जी की तरह रामायण के समस्त पात्रों का चित्रण किया है। सूरसागर में कुछ अति प्राकृतिक पात्रों का भी चित्रण किया गया है जैसे ब्रह्मा एवं इन्द्र आदि का।

ब्रह्मा जी को कृष्णावतार के संबंध मे मोह हो जाता है और वे बछडो को चुरा ले जाते है। अंत में उनका मोह भंग हो जाता है और वे वास्तविक स्वरूप को पहचान लेते है। इन्द्र अभिमानी देवता है। गोपों द्वारा इन्द्र पूजा के स्थान पर गोवर्धन की पूजा की जाती है और वे मेघ मण्डल को ब्रज को डुबोने के लिए आज्ञा देते है। बालक कृष्ण गोवर्धन धारण करके ब्रज की रक्षा करते है और इन्द्र स्वर्ग से ऐरावत हाथी पर सवार होकर कृष्ण की शरण में आते है। इस प्रकार सूरदास ने अनेक अति प्राकृतिक पात्रों का भी चित्रण किया है।

[40] श्रीमद्भागवत् गीता श्लोक–5, अध्याय 16, पृ० 931
[41] सूरसागर सार, पद 32

www.ignited.in

कृष्ण सुदामा की मैत्री बचपन की है। इसलिए दोनों मित्रों में बहुत प्रेम है। सूरदास ने सुदामाचरित में इसका बड़ा मनोहरी चित्रण किया है। सुदामा संतोषी ब्राह्मण है। निर्धन होने पर भी अपने ब्राह्मण स्वभाव को नही छोड़ते। अंत में अपनी पत्नी के कहने पर द्वारका जाते है। वहाँ जाकर भी राजा कृष्ण से कुछ नही मांगते। कृष्ण सुदामा की मैत्री और भोलेपन पर मुग्ध है। बिना माँगे ही उनको सब कुछ दानकर देते है। सूरदास ने महाभारत के पात्रों का भी चित्रण किया है। दुर्योधन और शकुनि आसुरी सम्पदा के प्रतीक है। पाण्डव धर्म के पथ पर हर परिस्थिति में दृढ़ रहते है। कृष्ण द्रौपदी की पीड़ा को समझाते है और चीर–हरण प्रसंग में अप्रत्यक्ष रूप से द्रौपदी की लाज की रक्षा करते है। अभिमानी दुर्योधन से कृष्ण का लगाव नही है। वे भक्त विदुर को प्यार करते है।

गोपियों का कृष्ण के प्रति बड़ा आकर्षण है। क्योंकि कृष्ण का अर्थ ही आकर्षण होता है। कृष्ण के प्रति गोपियां स्वतः ही आकर्षित होती है क्योंकि कृष्ण में सम्मोहन शक्ति बहुत अधिक है। गोपियां परकीया नायिकाएँ है। उनके लिए विधिनिषेध के बंधन भी है, लोक की मर्यादा भी है और वेद के आदेश भी है। गोपियां बाल–कृष्ण के प्रति बहुँत आकृष्ट है। कृष्ण अनेक ऐसे कृत्य करते है। जो एक चंचल और उदण्ड बालक के लक्षण है। जो लोक की मर्यादा के अनुसार शोभनीय नही है। वे माखन चोरी करते है, गोपियों की मटकियाँ फोंड़ते है और अनेक प्रकार के ऐसे कृत्य करते है। जो समाज की दृष्टि से उचित नही है। फिर भी गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में उन्माद की अवस्था को प्राप्त हो जाती है और वे सभी प्रकार के लोकाचार को भूल जाती है।

जब शरद पूर्णिमा के दिन यमुना के तट पर वे अर्द्धरात्रि को बाँसुरी बजाते है। बाँसुरी की धुन सुन कर गोपियाँ कृष्ण की रासलीला में सम्मिलित होने के लिए दौड़ने लगती है। वे सभी प्रकार की वेशभूषा का भी ध्यान नही रखती । पुत्र और पतियों को भी छोड़कर वे कृष्ण से मिलने के लिए आती है। उस समय कृष्ण उनको लोक और वेद की मर्यादा का पालन करने के लिए और घर वापस जाने के लिए कहते है। किन्तु गोपियाँ तो अपने तन मन की सुध भूलकर कृष्ण प्रेम में तल्लीन हो जाती है।

जब श्री कृष्ण रासलीला करते है तो जड़ और चेतन स्थिर हो जाते है। प्रत्येक गोपी को यह प्रतीत होता है कि उसके साथ ही कृष्ण है। जब गोपियों को अहंकार हो जाता है तब वे अन्तर्धान हो जाते है। सब उनके वियोग में गोपियाँ विलाप करती है। केवल राधा ही कृष्ण के साथ रहती है। जब राधा को अहंकार हो जाता है। तब राधा को भी छोड़कर अन्तर्धान हो जाते है। तब राधा के वियोग और विलाप में सब अहंकार लोप हो जाता है। तब श्री कृष्ण पुनः प्रकट हो जाते है। तब गोपियों के आन्नद की सीमा नही रहती। गोपियों की प्रेम भक्ति के सामने बड़े–बड़े सिद्ध योगी और महात्मा भी नही टिक सकते। वैष्णव भक्तों ने गोपियों के इस महाभाव को बहुत ऊँचा स्थान प्रदान किया है। गोपियों की प्रेमाभक्ति बड़े–बड़े सिद्धों, तपस्वियों, योगियों, साधको के लिए ईर्ष्या का विषय है। इसी प्रसंग में 'श्रीमद् भागवत' में प्रश्न उठाया गया था कि परकीया नायिकाओं के साथ संबंध लोक मर्यादा व वेद मर्यादा के अनुकूल नही है। तब उत्तर मिला था कि कृष्ण तो सारे जगत के पति है उनको यह दोष नही लग सकता जिस प्रकार अग्नि सभी को भस्म कर देती है। सूर्य की किरणे अच्छी या बुरी सभी वस्तुओं पर चमकती है उनको कोई दोष नही लग सकता इसलिए कृष्ण सर्वशक्तिमान है। उनको कोई दोष नही लग सकता। तुसलीदास जी भी कहते हैं, "समर्थ को न दोष गुसांई।[42]

कंस को एक अत्यचारी आसुरी प्रवृति का बताया गया है जो न लोक की मर्यादा को मानता है न शास्त्र की मर्यादा को। वह इतना बड़ा चरित्रहीन व्यक्ति है। वह अपने पिता उग्रसेन से राजसिंहासन को छीन लेता है और स्वयं बल प्रयोग से राजा बन बैठता है उसके अत्याचार की अनेक विचित्र कहानियाँ है। वह इतना अधिक लोगों पर अत्यचार करने लगता है कि लोग हाहाकार करने लगते है। वह अपने बहन एवं बहनोई को इस डर से जेल में ड़ाल देता है कि वासुदेव और देवकी का आठवां पुत्र उसका वध करेगा और वह दिग्भ्रमित होकर कृष्ण को मारने के लिए अनेक षड़यन्त्र करता है और कपट चातुर्य से कृष्ण और बलराम को मारने के लिए अनेक षड़यन्त्र रचता है। नंद बाबा को कोई गाड़ी भर 'नीलकमल' मँगवाने का आदेश देता है। अक्रूर के द्वारा कृष्ण और बलराम को राज महलों में बुलवाता है। राजमहल के मुख्यद्वार पर कुबललियापीड़ हाथी को मदोन्मत्त करके खड़ा कर देता है। जैसे ही बलराम और कृष्ण आयेगें तो ये हाथी उन्हें अपने पैरों से कुचल देगा। रंगशाला में कृष्ण और बलराम को मारने के लिए चाणूर तथा मुष्टिक पहलवानों को भेजता है। कृष्ण और बलराम रंगशाला में दोनों पहलवानों को पछाड़ देते है तब वह तलवार लेकर कृष्ण को मारने के लिए उछल पछता है। कृष्ण कंस के केश पकड़ कर धरती पर पटककर मार देते है।

कृष्ण के प्रति यशोदा और नंद बाबा की ममता बहुत अधिक है। नंद बाबा के प्रति कृष्ण का प्रेम बाल्यकाल से ही है। नंद उसका बहुत ध्यान रखते है। जब कृष्ण के अनिष्ट की आशंका होती है तो वे काँपने लगते है। उनको कई बार ऐसे सपने आते है कि कृष्ण का अपहरण कर लिया गया है। यशोदा तो कृष्ण को ताड़ती भी है, बुरा–भला भी कहती है तथा ऊखल से भी बाँध देती है। नंद बाबा को कृष्ण को मारना तो दूर की बात है कभी कठोर वचन भी नही बोलते है और न धमकाते है।

संदर्भिका

प्रभुदयाल मीतलए, सूरदास की वार्ता, अग्रवाल प्रैस मथुरा, सं. 2015

डॉ0 प्रेम शंकर, कृष्ण काव्य और सूर, स्मृति प्रकाशन 124, शाहदरा बाग, इलाहाबाद 2015

डॉ0 ब्रजेश्वर शर्मा , सूरदास, जीवन और काव्य का अध्ययन, हिन्दी परिषद, प्रयाग, तृतीय संस्करण 1999

डॉ ब्रजेश्वर शर्मा , सूरदास, लोक भारती प्रकाशन 15ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2015

मनमोहन गौतम, सूर की काव्य कला, भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली, द्वितीय संशोधित 1963

[42] श्रीरामचरितमानस

Corresponding Author

Pushpa Rani*

Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari,
Rajasthan

E-Mail –